This question paper contains 3 printed pages. *Your Roll No. .....*

Sl. No. of Ques. Paper	**: 3526**	**FC**
Unique Paper Code	**: 12055105**	
Name of Paper	**: हिन्दी कहानी**	
Name of Course	**: B.A. (Hons.) Hindi (GE)**	
Semester	**: I**	
Duration	**: 3 hours**	
Maximum Marks	**: 75**	

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी में अभिव्यक्त प्रेम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'पूस की रात' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

2. कहानी कला के आधार पर 'पाजेब' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर माँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। 12

3. 'परिन्दे' व्यक्ति के अकेलेपन और अजनबीपन की व्यथा को उजागर करती है— समीक्षा कीजिए।

अथवा

'सिक्का बदल गया' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 12

4. 'वापसी' में चित्रित गजाधर बाबू की मनःस्थिति पर प्रकाश डालिए।

अथवा

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'घुसपैठिये' कहानी की समीक्षा कीजिए। 12

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 9×3=27

(क) बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाड़ीवालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्केवाले कभी घोड़ों की नानी से अपना निकट संबंध स्थिर रखते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न

P. T. O.

होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों को चींथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं, और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले, तंग, चक्करदार गलियों में, हर एक लड्ढी वाले के लिए ठहरकर सबका समुद्र उड़ाकर, 'बचो खालसाजी', 'हटो भाई जी', 'ठहरना माई', 'आने दो लालाजी', 'हटो बाछा' कहते हुए सफेद फेटों, खच्चरों और बत्तखों, गन्ने, खोमचे और भारेवालों के जंगल में राह खेते हैं।

अथवा

थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों। अंधकार के उस अनंत सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

(ख) हीरामन का बहुत प्रिय गीत है यह। महुआ घटवारिन गाते समय उसके सामने सावन-भादों की नदी उमड़ने लगती है; अमावस्या की रात और घने बादलों में रह-रहकर बिजली चमक उठती है। उसी चमक में लहरों से लड़ती हुई बारी-कुमारी महुआ की झलक उसे मिल जाती है। सफरी मछली की चाल और तेज़ हो जाती है। उसको लगता है, वह खुद सौदागर का नौकर है। महुआ कोई बात नहीं सुनती। परतीत करती नहीं। उलटकर देखती भी नहीं। और वह थक गया है, तैरते-तैरते।

अथवा

सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें पैबन्द लगे हुए थे। दोनों बड़े लड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशीजी औंधे मुँह होकर निश्चिन्तता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छँटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो।

(ग) "हे भ्रद, हमारे पूर्वजों और मनुष्यों का बड़ा ही अंतरंग संबंध रहा है। उनके लिए हम अपने पुष्प, अपने बीच छिपी सारी सपंदा, कंद-मूल, फल, पशु-पक्षी सब कुछ निछावर कर चुके हैं और आज भी करने के लिए प्रस्तुत हैं। विश्वास करें, शुरु से ही कुछ ऐसा नाता रहा है कि हमें भी उनके बिना खास अच्छा नहीं लगता। जवाब में उन्होंने भी हमें भरपूर प्यार दिया है। लेकिन आप? .... हमें सदेंह है कि आप मनुष्य हैं! ....

अथवा

सोनकर को पहली ही परीक्षा में फेल कर दिया गया था। क्योंकि उसने प्रणव मिश्रा के खिलाफ पुलिस में नामजद रपट लिखाने का दुस्साहस किया था, डीन और अन्य प्रोफेसरों तक शिकायत

पहुँचाने की हिमाकत की थी, यह भूलकर कि वह इस चक्रव्यूह में अकेला फँस गया है, जहाँ से बाहर आने के लिए उसे कौरवों की कई अक्षौहिणी सेना और अनेक महारथियों से टकराना पड़ेगा। परीक्षाफल का व्यूह भेदकर सोनकर बाहर नहीं आ पाया था। कई महारथियों ने निहत्थे सोनकर की हत्या कर दी थी। जिसे आत्महत्या कहकर प्रचारित किया गया था।